*Quest Journals*
*Journal of Research in Humanities and Social Science*
*Volume 14 ~ Issue 3 (March 2026) pp: 137-142*
*ISSN(Online):2321-9467*
www.questjournals.org

**Research Paper**

# रामचरितमानस में भक्ति-भावना और लोक-मंगल की अवधारणा

डॉ० अशोक कुमार शर्मा
*आचार्य हिंदी*
*राजकीय महाविद्यालय गंगापुर सिटी (राज०)*

***सारांश***

*गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस हिंदी भक्ति साहित्य की एक महत्वपूर्ण काव्यकृति है जिसमें धार्मिक आस्था, नैतिक मूल्यों और सामाजिक चेतना का संतुलित समन्वय दिखाई देता है। इस ग्रंथ में तुलसीदास ने भक्ति को केवल व्यक्तिगत आध्यात्मिक अनुभव के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उसे व्यापक सामाजिक दृष्टि से भी जोड़ा है। रामचरितमानस में भक्ति-भावना मनुष्य के आंतरिक शुद्धिकरण, नैतिक आचरण और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग बनती है। तुलसीदास के अनुसार भक्ति का आधार केवल अनुष्ठान या बाहरी आडंबर नहीं है, बल्कि वह ईश्वर के प्रति गहरे विश्वास, प्रेम और समर्पण की भावना पर आधारित है। इसी कारण इस काव्य में भक्ति का स्वरूप अत्यंत सहज, मानवीय और लोकाभिमुख दिखाई देता है। इसके साथ ही तुलसीदास ने अपने काव्य में लोक-मंगल की भावना को भी विशेष महत्व दिया है। उनके अनुसार धर्म और भक्ति का अंतिम उद्देश्य समाज में नैतिकता, करुणा और समरसता की स्थापना करना है। रामचरितमानस में राम के चरित्र, उनके आचरण और रामराज्य की कल्पना के माध्यम से एक ऐसे आदर्श समाज की परिकल्पना प्रस्तुत की गई है जिसमें न्याय, सद्भाव और लोककल्याण का वातावरण विद्यमान हो। इस प्रकार यह काव्य केवल धार्मिक ग्रंथ के रूप में सीमित नहीं रहता, बल्कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना और लोककल्याण की भावना का भी प्रतिनिधित्व करता है। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य रामचरितमानस में भक्ति-भावना और लोक-मंगल की अवधारणा के विभिन्न आयामों का विश्लेषण करना है, जिससे यह स्पष्ट किया जा सके कि तुलसीदास ने अपने काव्य में आध्यात्मिक अनुभूति और सामाजिक आदर्शों के बीच किस प्रकार एक गहरा संबंध स्थापित किया।*

***मुख्य शब्द***
*रामचरितमानस, तुलसीदास, भक्ति-भावना, लोक-मंगल, भक्ति साहित्य, रामभक्ति, भारतीय सांस्कृतिक मूल्य, धर्म और समाज*

## 1. प्रस्तावना

भारतीय भक्ति साहित्य की परंपरा में *रामचरितमानस* का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। गोस्वामी तुलसीदास ने इस काव्य के माध्यम से न केवल धार्मिक आस्था को अभिव्यक्ति दी, बल्कि भारतीय समाज के नैतिक और सांस्कृतिक आदर्शों को भी सुदृढ़ करने का प्रयास किया। मध्यकालीन भारतीय समाज में जब सामाजिक और धार्मिक जीवन अनेक प्रकार की जटिलताओं से गुजर रहा था, तब तुलसीदास ने भक्ति को एक ऐसे मार्ग के रूप में प्रस्तुत किया जो मनुष्य को आध्यात्मिक संतुलन के साथ-साथ सामाजिक समरसता की ओर भी प्रेरित करता है। इस दृष्टि से *रामचरितमानस* केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि वह भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना का भी महत्वपूर्ण दस्तावेज है। तुलसीदास की भक्ति-दृष्टि का प्रमुख आधार ईश्वर के प्रति प्रेम, श्रद्धा और समर्पण है। उनके अनुसार भक्ति का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत मोक्ष की प्राप्ति नहीं है, बल्कि वह मनुष्य के जीवन को नैतिक और सामाजिक दृष्टि से भी परिष्कृत करती है। यही कारण है कि *रामचरितमानस* में

भक्ति का स्वरूप अत्यंत व्यापक दिखाई देता है। इसमें राम के चरित्र के माध्यम से आदर्श आचरण, करुणा, न्याय और लोकहित की भावना को महत्व दिया गया है। इस प्रकार भक्ति और नैतिक जीवन के बीच एक गहरा संबंध स्थापित होता है।

इसके साथ ही *रामचरितमानस* में लोक-मंगल की अवधारणा भी अत्यंत महत्वपूर्ण रूप में सामने आती है। तुलसीदास के अनुसार धर्म और भक्ति का वास्तविक उद्देश्य समाज में सद्भाव, नैतिकता और करुणा की स्थापना करना है। राम के चरित्र और उनके आदर्श शासन के माध्यम से एक ऐसे समाज की कल्पना की गई है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के कल्याण का विचार किया जाता है। इस प्रकार *रामचरितमानस* में भक्ति और लोक-मंगल की अवधारणाएँ परस्पर जुड़ी हुई दिखाई देती हैं। इसी संदर्भ में *रामचरितमानस* में भक्ति-भावना और लोक-मंगल की अवधारणा का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। यह अध्ययन यह समझने में सहायक है कि तुलसीदास ने अपने काव्य के माध्यम से किस प्रकार आध्यात्मिक अनुभूति और सामाजिक आदर्शों के बीच संतुलन स्थापित किया। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य इसी दृष्टि से *रामचरितमानस* में भक्ति-भावना तथा लोक-मंगल की अवधारणा के स्वरूप का विश्लेषण करना है।

### 2. रामचरितमानस में भक्ति का स्वरूप

*रामचरितमानस* में भक्ति का स्वरूप अत्यंत व्यापक और मानवीय है। तुलसीदास ने भक्ति को केवल धार्मिक अनुष्ठानों या कर्मकांडों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे मनुष्य के आंतरिक भाव और आध्यात्मिक अनुभूति से जोड़ा है। उनके अनुसार भक्ति का मूल आधार ईश्वर के प्रति श्रद्धा, विश्वास और समर्पण की भावना है। इस दृष्टि से भक्ति मनुष्य के अंतःकरण को शुद्ध करने वाली शक्ति के रूप में सामने आती है। तुलसीदास की भक्ति-दृष्टि में प्रेम और विनम्रता का विशेष महत्व है। वे भक्ति को ऐसा मार्ग मानते हैं जो सभी मनुष्यों के लिए समान रूप से उपलब्ध है, चाहे उनकी सामाजिक स्थिति या ज्ञान का स्तर कुछ भी हो। इसी कारण *रामचरितमानस* में भक्ति को सहज और सर्वसुलभ मार्ग के रूप में प्रस्तुत किया गया है। तुलसीदास ने इस भाव को अत्यंत स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हुए लिखा है—

"बड़ भाग मानुस तनु पावा,
सुर दुर्लभ सब ग्रंथन गावा।"

यहाँ मनुष्य जीवन की महत्ता और ईश्वर भक्ति के महत्व को रेखांकित किया गया है। तुलसीदास के अनुसार मानव जीवन ईश्वर की कृपा का परिणाम है और इसका सर्वोच्च उद्देश्य भक्ति के माध्यम से आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त करना है। *रामचरितमानस* में भक्ति का स्वरूप केवल व्यक्तिगत साधना तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें नैतिक आचरण और सद्गुणों का भी समावेश है। तुलसीदास के अनुसार सच्ची भक्ति वही है जो मनुष्य के व्यवहार में विनम्रता, करुणा और सेवा की भावना उत्पन्न करे। इस प्रकार भक्ति मनुष्य के चरित्र निर्माण और सामाजिक जीवन के परिष्कार का भी माध्यम बन जाती है।

### 3. तुलसीदास की भक्ति-दृष्टि

गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति-दृष्टि भारतीय भक्ति परंपरा की विशिष्ट विशेषताओं को समाहित करती है। उनकी भक्ति में दार्शनिक गहराई के साथ-साथ लोकजीवन की सहजता भी दिखाई देती है। तुलसीदास ने भक्ति को केवल धार्मिक साधना के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे मनुष्य के नैतिक और आध्यात्मिक जीवन को संतुलित करने वाला मार्ग माना है। इस दृष्टि से उनकी भक्ति-दृष्टि अत्यंत मानवीय और व्यावहारिक प्रतीत होती है। तुलसीदास की भक्ति में राम को ईश्वर के साथ-साथ एक आदर्श पुरुष के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है। राम के चरित्र में करुणा, मर्यादा, न्याय और धर्म जैसे गुणों का समन्वय दिखाई देता है। यही कारण है कि तुलसीदास की भक्ति केवल ईश्वर की आराधना तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह आदर्श जीवन मूल्यों की स्थापना से भी जुड़ जाती है। राम के प्रति भक्ति का अर्थ केवल पूजा या स्तुति नहीं है, बल्कि उनके आदर्शों को जीवन में अपनाना भी है। तुलसीदास की भक्ति-दृष्टि का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि उन्होंने भक्ति को समाज के सभी वर्गों के लिए समान रूप से उपलब्ध बताया है। उनके अनुसार ईश्वर की कृपा प्राप्त करने के लिए जन्म, जाति या सामाजिक स्थिति कोई बाधा नहीं है। भक्ति का वास्तविक आधार श्रद्धा, विश्वास और समर्पण की भावना है। इसी भाव को व्यक्त करते हुए तुलसीदास लिखते हैं—

"रामहि केवल प्रेम पियारा,
जानि लेहु जो जाननिहारा।"

इन पंक्तियों में यह स्पष्ट किया गया है कि ईश्वर के लिए प्रेम और भक्ति ही सबसे महत्वपूर्ण है। यहाँ ज्ञान, कर्म या सामाजिक प्रतिष्ठा की अपेक्षा प्रेम और समर्पण को अधिक महत्व दिया गया है। तुलसीदास की भक्ति-दृष्टि में विनम्रता और दया का भी विशेष महत्व है। उनके अनुसार सच्चा भक्त वही है जो अपने व्यवहार में करुणा, सहानुभूति और सेवा की भावना को अपनाता है। इस प्रकार भक्ति केवल आध्यात्मिक अनुभव तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह सामाजिक जीवन में भी नैतिक मूल्यों को स्थापित करने का माध्यम बन जाती है। इस प्रकार तुलसीदास की भक्ति-दृष्टि में आध्यात्मिक अनुभूति, नैतिक जीवन और सामाजिक समरसता का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। यही कारण है कि *रामचरितमानस* में व्यक्त भक्ति केवल व्यक्तिगत साधना का विषय नहीं है, बल्कि वह लोककल्याण और सामाजिक आदर्शों से भी गहराई से जुड़ी हुई है। इस काव्य में भक्ति को अत्यंत सरल और मानवीय रूप में प्रस्तुत किया गया है। तुलसीदास यह स्पष्ट करते हैं कि ईश्वर की प्राप्ति के लिए जटिल साधनाओं की अपेक्षा सच्चे मन से की गई भक्ति अधिक महत्वपूर्ण है। इसी संदर्भ में वे कहते हैं—

"निर्मल मन जन सो मोहि पावा,
मोहि कपट छल छिद्र न भावा।"

यह पंक्ति यह संकेत करती है कि ईश्वर की प्राप्ति का आधार मन की शुद्धता और सच्ची भक्ति है। इस प्रकार *रामचरितमानस* में भक्ति का स्वरूप आडंबरहीन, सरल और मानवीय मूल्यों से युक्त दिखाई देता है, जो इसे भक्ति साहित्य की एक विशिष्ट कृति बनाता है।

### 4. रामचरितमानस में लोक-मंगल की अवधारणा

*रामचरितमानस* में भक्ति के साथ-साथ लोक-मंगल की भावना को भी अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। तुलसीदास की काव्य-दृष्टि में धर्म और भक्ति का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत आध्यात्मिक उन्नति नहीं है, बल्कि समाज में सद्भाव, नैतिकता और करुणा की स्थापना करना भी है। इस दृष्टि से *रामचरितमानस* में लोक-मंगल की अवधारणा एक केंद्रीय तत्व के रूप में उपस्थित है। तुलसीदास के अनुसार धर्म का वास्तविक स्वरूप वही है जो समाज के कल्याण से जुड़ा हो। उनके काव्य में बार-बार यह संकेत मिलता है कि मनुष्य को अपने जीवन में ऐसे आचरण को अपनाना चाहिए जिससे दूसरों का हित हो और समाज में समरसता बनी रहे। इस विचार को व्यक्त करते हुए तुलसीदास लिखते हैं—

"परहित सरिस धरम नहिं भाई,
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।"

इन पंक्तियों में यह स्पष्ट किया गया है कि दूसरों के हित के लिए कार्य करना ही सबसे बड़ा धर्म है, जबकि दूसरों को कष्ट पहुँचाना सबसे बड़ा अधर्म है। इस प्रकार तुलसीदास की दृष्टि में धर्म और भक्ति का मूल उद्देश्य लोककल्याण की भावना को सुदृढ़ करना है। *रामचरितमानस* में राम का चरित्र भी लोक-मंगल की इसी भावना का प्रतिनिधित्व करता है। राम केवल एक धार्मिक प्रतीक नहीं हैं, बल्कि वे आदर्श शासक और लोकनायक के रूप में भी प्रस्तुत किए गए हैं। उनके आचरण में न्याय, करुणा और समता की भावना दिखाई देती है। रामराज्य के वर्णन में तुलसीदास ने एक ऐसे आदर्श समाज की कल्पना की है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति सुखी और संतुष्ट है। इस संदर्भ में वे लिखते हैं—

"दैहिक दैविक भौतिक तापा,
रामराज नहिं काहुहि व्यापा।"

यह वर्णन उस आदर्श सामाजिक व्यवस्था की ओर संकेत करता है जिसमें धर्म, न्याय और लोककल्याण का वातावरण स्थापित हो जाता है। इस प्रकार *रामचरितमानस* में लोक-मंगल की अवधारणा केवल एक नैतिक उपदेश के रूप में नहीं आती, बल्कि वह राम के चरित्र, उनके आचरण और रामराज्य की कल्पना के माध्यम से सजीव रूप में प्रस्तुत होती है। तुलसीदास ने अपने काव्य के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि सच्ची भक्ति वही है जो मनुष्य को केवल आध्यात्मिक शांति ही नहीं देती, बल्कि उसे समाज के कल्याण के लिए प्रेरित भी करती है।

### 5. भक्ति-भावना और लोक-मंगल का पारस्परिक संबंध

*रामचरितमानस* में भक्ति-भावना और लोक-मंगल की अवधारणाएँ एक-दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई दिखाई देती हैं। तुलसीदास की काव्य-दृष्टि में भक्ति केवल ईश्वर के प्रति व्यक्तिगत समर्पण का मार्ग नहीं है, बल्कि वह मनुष्य के नैतिक और

सामाजिक जीवन को भी प्रभावित करती है। इस दृष्टि से भक्ति और लोक-मंगल परस्पर पूरक तत्वों के रूप में सामने आते हैं। तुलसीदास के अनुसार सच्ची भक्ति मनुष्य के भीतर करुणा, विनम्रता और सेवा की भावना उत्पन्न करती है। जब मनुष्य के हृदय में ईश्वर के प्रति प्रेम और श्रद्धा का भाव उत्पन्न होता है, तब उसका व्यवहार भी अधिक सहृदय और मानवीय हो जाता है। इस प्रकार भक्ति मनुष्य को स्वार्थ और अहंकार से मुक्त करके उसे दूसरों के हित के लिए प्रेरित करती है। इसी कारण *रामचरितमानस* में भक्ति का संबंध नैतिक आचरण और लोकहित की भावना से जोड़ा गया है। राम के चरित्र में यह संबंध स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। राम के प्रति भक्ति केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं है, बल्कि उनके आदर्शों को जीवन में अपनाने की प्रेरणा भी देती है। राम के आचरण में करुणा, न्याय और समता की जो भावना दिखाई देती है, वही भक्ति के माध्यम से समाज में स्थापित होती है। इस प्रकार राम के प्रति भक्ति का अर्थ केवल ईश्वर की आराधना नहीं है, बल्कि उनके आदर्शों का अनुसरण भी है।

*रामचरितमानस* में अनेक प्रसंग ऐसे हैं जहाँ भक्ति और लोक-मंगल का संबंध स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। राम के प्रति भक्ति रखने वाले पात्र अपने आचरण में विनम्रता, सेवा और सहानुभूति का परिचय देते हैं। उनके व्यवहार में समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना दिखाई देती है। इस प्रकार तुलसीदास यह संकेत करते हैं कि सच्ची भक्ति वही है जो मनुष्य को केवल आध्यात्मिक साधना तक सीमित न रखकर उसे समाज के कल्याण के लिए भी प्रेरित करे। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि *रामचरितमानस* में भक्ति-भावना और लोक-मंगल की अवधारणाएँ एक-दूसरे से अलग नहीं हैं। तुलसीदास ने अपने काव्य में यह दिखाने का प्रयास किया है कि भक्ति का वास्तविक उद्देश्य केवल व्यक्तिगत मोक्ष नहीं, बल्कि समाज में नैतिकता, करुणा और समरसता की स्थापना करना भी है। इसी कारण *रामचरितमानस* में भक्ति और लोक-मंगल का संबंध अत्यंत घनिष्ठ और अर्थपूर्ण दिखाई देता है।

### 6. रामचरितमानस में भक्ति के सामाजिक आयाम

*रामचरितमानस* में भक्ति केवल आध्यात्मिक अनुभव का विषय नहीं है, बल्कि उसका एक महत्वपूर्ण सामाजिक आयाम भी है। तुलसीदास ने भक्ति को ऐसा मार्ग माना है जो मनुष्य के भीतर नैतिकता, करुणा और समता की भावना को विकसित करता है। इस दृष्टि से भक्ति का प्रभाव केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह समाज के व्यापक जीवन को भी प्रभावित करता है। तुलसीदास की काव्य-दृष्टि में भक्ति समाज के विभिन्न वर्गों के बीच समानता और समरसता की भावना को स्थापित करने का माध्यम बनती है। *रामचरितमानस* के अनेक प्रसंगों में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि ईश्वर की कृपा और भक्ति का मार्ग सभी के लिए समान रूप से खुला है। सामाजिक स्थिति, जाति या बाहरी प्रतिष्ठा भक्ति के मार्ग में कोई बाधा नहीं बनती। इस प्रकार तुलसीदास ने भक्ति के माध्यम से समाज में व्याप्त विभेदों को समाप्त करने की प्रेरणा दी है। निषादराज और शबरी जैसे पात्रों के माध्यम से यह विचार और अधिक स्पष्ट रूप से सामने आता है। ये पात्र सामाजिक दृष्टि से साधारण होते हुए भी अपनी सच्ची भक्ति के कारण अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाते हैं। राम का इन पात्रों के प्रति सम्मानपूर्ण व्यवहार यह दर्शाता है कि भक्ति के आधार पर मनुष्य के बीच किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिए। इस प्रकार *रामचरितमानस* में भक्ति सामाजिक समानता और मानवीय एकता का भी संदेश देती है। तुलसीदास की दृष्टि में भक्ति मनुष्य के आचरण को भी प्रभावित करती है। सच्चा भक्त वही है जो अपने व्यवहार में विनम्रता, सहानुभूति और सेवा की भावना को अपनाता है। इस प्रकार भक्ति केवल धार्मिक साधना का मार्ग नहीं है, बल्कि वह मनुष्य के सामाजिक जीवन को भी अधिक नैतिक और मानवीय बनाने का साधन बन जाती है। इस प्रकार *रामचरितमानस* में भक्ति का स्वरूप व्यापक और सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण दिखाई देता है। तुलसीदास ने भक्ति के माध्यम से समाज में नैतिकता, समरसता और लोककल्याण की भावना को सुदृढ़ करने का प्रयास किया है, जो इस काव्य की सांस्कृतिक और सामाजिक महत्ता को और अधिक बढ़ा देता है।

### 7. निष्कर्ष

*रामचरितमानस* में भक्ति-भावना और लोक-मंगल की अवधारणा का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि तुलसीदास की काव्य-दृष्टि केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि वह व्यापक सामाजिक और नैतिक मूल्यों से भी जुड़ी हुई है। तुलसीदास ने अपने काव्य में भक्ति को ऐसा मार्ग बताया है जो मनुष्य के भीतर आध्यात्मिक शांति के साथ-साथ नैतिक चेतना को भी विकसित करता है। इस दृष्टि से *रामचरितमानस* में भक्ति केवल व्यक्तिगत साधना का विषय नहीं है, बल्कि वह समाज के कल्याण और समरसता की स्थापना का भी माध्यम बनती है। तुलसीदास की भक्ति-दृष्टि में प्रेम, श्रद्धा और समर्पण का

विशेष महत्व है। उनके अनुसार सच्ची भक्ति वही है जो मनुष्य को अहंकार, स्वार्थ और द्वेष से मुक्त कर उसे करुणा और सेवा की भावना की ओर प्रेरित करे। इसी कारण *रामचरितमानस* में भक्ति का स्वरूप अत्यंत सरल, मानवीय और लोकाभिमुख दिखाई देता है। यह भक्ति मनुष्य के आचरण को भी प्रभावित करती है और उसे नैतिक जीवन की ओर अग्रसर करती है। इसके साथ ही *रामचरितमानस* में लोक-मंगल की अवधारणा भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। राम के चरित्र और रामराज्य की कल्पना के माध्यम से तुलसीदास ने एक ऐसे आदर्श समाज का चित्र प्रस्तुत किया है जिसमें न्याय, करुणा और समरसता का वातावरण विद्यमान हो। यह आदर्श केवल धार्मिक कल्पना नहीं है, बल्कि वह समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना की दिशा में एक प्रेरणा भी प्रदान करता है। इस प्रकार *रामचरितमानस* में भक्ति और लोक-मंगल की अवधारणाएँ परस्पर पूरक रूप में दिखाई देती हैं। तुलसीदास ने अपने काव्य के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि भक्ति का वास्तविक उद्देश्य केवल व्यक्तिगत मोक्ष की प्राप्ति नहीं है, बल्कि वह समाज में सद्भाव, नैतिकता और लोककल्याण की भावना को सुदृढ़ करना भी है। यही कारण है कि *रामचरितमानस* भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना और नैतिक मूल्यों का एक महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है।

## संदर्भ सूची


- तुलसीदास. *रामचरितमानस.* गोरखपुर: गीता प्रेस, 2018.
- शुक्ल, रामचंद्र. *हिंदी साहित्य का इतिहास.* वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा, 2015.
- द्विवेदी, हजारी प्रसाद. *तुलसीदास.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2016.
- द्विवेदी, हजारी प्रसाद. *हिंदी साहित्य की भूमिका.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2012.
- शर्मा, रामविलास. *तुलसीदास और उनका युग.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2017.
- शर्मा, रामविलास. *भारतीय साहित्य की भूमिका.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2014.
- सिंह, नामवर. *इतिहास और आलोचना.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2018.
- सिंह, नामवर. *कविता के नए प्रतिमान.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2018.
- नागेन्द्र. *हिंदी साहित्य का इतिहास.* नई दिल्ली: मयूर पेपरबैक्स, 2017.
- त्रिपाठी, विश्वनाथ. *हिंदी आलोचना का विकास.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2019.
- मिश्र, विद्यानिवास. *भारतीय संस्कृति और साहित्य.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2016.
- अग्रवाल, पुरुषोत्तम. *साहित्य और समाज.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2018.
- चतुर्वेदी, रामस्वरूप. *हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 2014.
- पांडेय, रामकुमार. *तुलसीदास का साहित्य और युगीन संदर्भ.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2019.
- सिंह, विश्वनाथ प्रसाद. *रामचरितमानस का समाजदर्शन.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2020.
- यादव, सुधीर. *रामचरितमानस और भारतीय संस्कृति.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2021.
- मिश्रा, अजय कुमार. *भक्ति साहित्य की सामाजिक चेतना.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2018.
- शुक्ल, कृष्णदत्त. *तुलसीदास का काव्य और दर्शन.* वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन, 2017.
- श्रीवास्तव, हरीशचंद्र. *रामकथा की परंपरा और रामचरितमानस.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2020.
- त्रिपाठी, रामस्वरूप. *रामचरितमानस का सांस्कृतिक अध्ययन.* वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन, 2016.
- वर्मा, रामकुमार. *हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 2017.

- सिंह, केदारनाथ. *भक्ति काव्य की परंपरा.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2015.
- शर्मा, महेशचंद्र. *रामचरितमानस का दार्शनिक अध्ययन.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2022.
- जोशी, सुधीर. *भक्ति साहित्य और लोकमंगल की परंपरा.* नई दिल्ली: अयन प्रकाशन, 2021.
- गुप्ता, रमेशचंद्र. *रामचरितमानस में भक्ति और समाज.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2019.